फ़ज़ाइले दरूद पाक

दरूद और सलाम के लिए कुछ ख़ास वक़्त दुआ पाँचों नमाज़ों के बाद, अज़ान के बाद, अक़ामते नमाज़ के बाद, मस्जिद में दाखिल होने और बाहर आते वक़्त, वज़ू करते और वज़ू करने के बाद, दुआ के अव्वल, दरमियान और बाद, आसारे मुबारक की ज़ियारत के वक़्त, जुमे के दिन सुबह व शाम, पीर की रात, नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम ख़ाली लेते, सुनते और देखते वक़्त, घर में दाख़िल होने, किसी चीज़ के भूल जाने और मुसीबत व सख़्ती के वक़्त दरूद शरीफ़ के पढ़ने वाले के सर नेकियां जुड़ती और दस गुनाह मिटाए जाते हैं और दस दरजे बुलन्द होते हैं। कसरत से दरूद व सलाम पढ़ने वाले को नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत नसीब होगी। दरूद व सलाम पढ़ने वाले की मुहताजी और बदबख़्ती दूर हो जाती है।

इन दिनों में दरूद पढ़ना अफ़ज़ल है:–
जुमे के दिन, शंबा(सनीचर), दो शंबा(पीर) और जुमेरात में दरूद पढ़ना अफ़ज़ल है।

औक़ाते दरूद

सोते वक़्त, नींद से जागने पर, किसी मुसलमान से मुलाक़ात व मुसाफ़ह़ के वक़्त, ईद, बक़र–ईद के दिन, सुबह–शाम के वक़्त, दीनी किताबें पढ़ते, पढ़ाते वक़्त, रोज़ा–ए–अनवर और ख़ाना–ए– काअ़बा की ज़ियारत के वक़्त।

जो मुझ पर दरूद पढ़ेगा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाएगा।

(मुस्लिम शरीफ़)

दरूद पाक पढ़ने वाले की दस ख़ताऐं माफ़ और दस दरजे बुलन्द होते हैं। क़यामत के दिन वो उतना ही मेरे क़रीब होगा, जो मुझपर दरूद कस्रत से पढ़ता है। *(तिरमिज़ी शरीफ़)*

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى رُوْحِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَرْوَاحِ
وَصَلِّ عَلٰى جَسَدِ مُحَمَّدٍ فِى الْاَجْسَادِ
وَصَلِّ عَلٰى قَبْرِ مُحَمَّدٍ فِى الْقُبُوْرِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला रूहि़ मुह़म्मदिन फ़िल अर्वाह़ि व स़ल्लि अ़ला ज-स-दि मुह़म्मदिन फ़िल अज-सादि व स़ल्लि अ़ला क़ब्रि मुह़म्मदिन फ़िल क़ुबूरि।

(जो शख़्स़ यह दरूद शरीफ़ पढ़ेगा उसको ख़्वाब में हुज़ूरे अकरम (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ज़ियारत होगी)

मस्जिद में आने और जाने पर दरूद

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन।

(हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम जब मस्जिद में जाते या मस्जिद से निकलते तो यह दरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे)।

दस हज़ार दरूद के बराबर

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ اَفْضَلَ صَلَوَاتِكَ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन अफ़्-दला् स़-ल-वातिका।

(इस दरूद शरीफ़ के बारे में मन्कूल है कि यह दस हज़ार मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ने के बराबर है)

अस्सी साल की इबादत का स़वाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

अल्लाहुम्मा्-स़ल्लि-अ़ला-मुह़म्मदिन अ़ब्दिका्-व-रसूलिकन-नबीयियल उम्मीयि।

(हुज़ूरे अकरम (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के इर्शाद के मुताबिक़ जो शख़्स अस्सी मर्तबा यह दरूद पढ़े, अल्लाह तआ़ला उसके अस्सी साल के गुनाह माफ़ फ़रमा देगा।)

हज़ार दिन तक स़वाब मिलना

صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّجَزَاهُ عَنَّا مَا هُوَ اَهْلُهٗ

स़ल्लल्लाहु अ़ला मुह़म्मदिवँ व जज़ाहु

अन्ना मा हुवा अह्-लुहू।

(जो शख़्स यह दरूद पढ़े तो स़वाब लिखने वाले सत्तर फ़रिश्ते एक हज़ार दिन तक इसका स़वाब लिखेंगे)।

मुकम्मल दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिवँ व अ़ला आलि मुह़म्मदिन

(हुज़ूरे अकरम (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने स़हाबा से एक मर्तबा फ़रमाया तुम ना–मुकम्मल दरूद न पढ़ा करो। फिर स़हाबा–ए–किराम के पूछने पर आपने यह दरूद शरीफ़ तअ़्लीम फ़रमाया)

ताबेईन का दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اَبِيْنَا اِبْرَاهِيْمَ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव व अ़ला अबीना इबराहीमा

(हज़रत सुफ़ियान बिन उयेयना (रह़मतुल्लाहि अ़लैहि) ने फ़रमाया मैंने सत्तर साल से ज़्यादा हज़रात ताबेईन (रह़महमुल्लाह) को दौराने त़वाफ़ यह दरूद शरीफ़ पढ़ते हुए सुना)

दुआ-ए-कुनूत के बाद दरूद शरीफ़

وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ وَّسَلَّمَ

व सल्लल्लाहु अ़लन नबीयि मुह़म्मदिंव व सल्लमा

(ह़ज़रते ह़सन (रज़ियल्लाहु अन्हु) दुआऐ कुनूत के बाद यह दरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे)

मग़्फ़िरत का ज़रिआ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى كُلِّ حَالٍ وَّصَلَّى
اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اَهْلِ بَيْتِهٖ

अल्ह़म्दु लिल्लाहि अ़ला कुल्लि हालिंव व स़ल्लल्लाहु अ़ला मुह़म्मदिंव व अ़ला अहलि बैतिही

(जो शख़्स़ छींक आने पर यह दरूद पढ़ेगा तो मिन--जानिब अल्लाह एक परिन्दा पैदा होगा जो अ़र्श के नीचे पर फड़--फड़ाएगा और अल्लाह से अ़र्ज़ करेगा कि इस दरूद शरीफ़ के पढ़ने वाले को बख़्श दे)

दुआ क़बूल होना

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ
وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّارْضَ عَنْهُ رِضًى لَّا سَخَطَ بَعْدَهٗ

अल्लाहुम्मा रब्बा़ हाज़िहिद् दअ़्-वतित ताम-मति वस़्स़लातिल क़ा-इ-मति स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव वर्ज़ा़ अ़न्हु रिज़ल ला स-ख़-ता़ बअ़्-दहू

(जो शख़्स़ अज़ान के वक़्त यह दरूद शरीफ़ पढ़ेगा अल्लाह तआ़ला उसकी दुआ क़बूल फ़रमाएगा)।

कामिल दरूद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا
اَمَرْتَنَا اَنْ نُّصَلِّىَ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلَيْهِ
كَمَا يَنْبَغِىْ اَنْ يُّصَلّٰى عَلَيْهِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन कमा अ़मरतना अन नुस़ल्लिय अ़लैहि व स़ल्लि अ़लैहि कमा यम्बग़ी अंय-युस़ल्ला अ़लैहि

(ह़ज़रत अनस (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) ने रसूले करीम (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) से ऐसा दरूद शरीफ़ पुछा जिसको कामिल दरूद शरीफ़ कहा जा सके तो आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने दरूदे बाला तलक़ीन फ़रमाया)

चाँद की त़रह़ चेहरा होना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ صَلٰوتِكَ شَىْءٌ
وَّبَارِكْ عَلَى النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ بَرَكَاتِكَ شَىْءٌ
وَّارْحَمِ النَّبِيِّ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ رَّحْمَتِكَ شَىْءٌ وَّسَلِّمْ عَلَى
النَّبِيِّ مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنْ سَلَامِكَ شَىْءٌ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़लन नबिय्यि मुह़म्मदिन ह़त्ता ला यब्क़ा मिन स़लावातिका शइ-उँव व बारिक अ़लन नबिय्यि मुह़म्मदिन ह़त्ता ला यब्क़ा मिन बरा्कातिका् शइ-उँव व अरह़मिन नबिय्यि ह़त्ता ला यब्क़ा मिर-रह़मतिका शइ-उँव वसल्लिम अ़लन नबिय्यि मुह़म्मदिन ह़त्ता ला यब्क़ा मिन सलामिका शइ-उन

(हुज़ूर (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के इर्शाद के मुताबिक़ इस दरूद शरीफ़ के पढ़ने वाले का चेहरा पुल–स़िरात से गुज़रते वक़्त चाँद से ज़्यादा चमकदार होगा)

तमाम दरूदों के बराबर

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ ذِكْرِهٖ اَلْفَ اَلْفِ مَرَّةٍ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिम्बि-अ़-द-दि कुल्लि ज़िक-रिही अल्फ़ा अल्फ़ि मर-रतिन

(यह दरूद शरीफ़ पढ़ना हुज़ूरे अक्दस (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर सारे दरूद भेजने के बराबर है)।

जन्नत के फल

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिन अ़ब्दिका व-अ़ला आलि मुहम्मदिंव व बारिक व सल्लिम

(जो शख़्स इस दरूद शरीफ़ की पाबंदी करे वह जन्नत के ख़ास फल और मेवे खाएगा)

दरूद बाइ़से ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदि-निन नबिय्यिल उम्मियि व-आलिही वसल्लिम

(जो शख़्स जुमे के दिन एक हज़ार मर्तबा यह दरूद शरीफ़ पढ़े उसको ख़्वाब में रिसालत मआब (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ज़ियारत होगी। पाँच या सात मर्तबा जुमे तक पाबंदी से इसको पढ़ें)

हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ
الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अन-ज़िल-हुल मुक़ अ़दल मुक़र-रबा इन-दका यौमल क़िया-मति।

जो शख़्स यह दरूद पढ़ेगा उसको रसुलूल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की शफ़ाअ़त वाजिब होगी)।

क़र्ज़ की अदाएगी

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन

(ज़ुहर की नमाज़ के बाद यह दरूद शरीफ़ सौ मर्तबा पढ़ने वाले को तीन बातें हासिल होंगी।)

(१) कभी मक़रूज़ न होगा।

(२) अगर क़र्ज़ होगा तो वह अदा हो जाएगा ख्वाह जितना भी क़र्ज़ हो।

(३) क़ियामत के दिन उसका कोई हिसाब न होगा।

ईमान की हिफ़ाज़त

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلَاةً دَائِمَةً بِدَوَامِكَ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व अ़ला आलि मुहम्मदिन स़लातन दा-इ-मतम्बि-दवा-मिका

(जो शख़्स पचास मर्तबा दिन में और पचास मर्तबा रात में इस दरूद शरीफ़ को पढ़ेगा तो उसका ईमान जाने से महफ़ूज़ होगा)

मग़्फ़िरत का ज़रिआ

اللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كُلَّمَا ذَكَرَهُ الذَّاكِرُوْنَ وَكُلَّمَا غَفَلَ عَنْ ذِكْرِهِ الْغَافِلُوْنَ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिन कुल्लमा ज़-क-रहुज़-ज़ाकिरूना व कुल्लमा ग़फ़ला अ़न ज़िकरिहिल ग़ाफ़िलून

इमाम इस्माईल बिन इब्राहीम मुज़्नी ने हज़रत इमाम शाफ़ई को ख़्वाब में देखा और पुछा अल्लाह पाक ने आपके साथ क्या मुआमला फ़रमाया? तो उन्होंने जवाब दिया इस दरूद शरीफ़ की बरकत से अल्लाह पाक ने मुझे बख़्श दिया और इज़्ज़त व एहतिराम से जन्नत में ले जाने का हुक्म दिया।

परेशानियाँ दूर हों

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الطَّاهِرِ الزَّكِيِّ صَلَاةً
تُحَلُّ بِهِ الْعُقَدُ وَتُفَكُّ بِهَا الْكُرَبُ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन-नबीय्यिल उम्मीय्यित-ताहिरिज़ ज़कीय्यि सलातन तु-हल्लु बिहिल उ-क़-दू व तु-फ़क्कु बि-हल कु-र-बु

(यह दरूद शरीफ़ बार–बार पढ़ने से अल्लाह तआला परेशानी दूर फ़रमा देता है)

जन्नत में ठिकाना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ
النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ عَلَيْهِ السَّلَامُ

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुहम्मदि निन-नबीयिल उम्मीय्यि अ़लैहिस-सलाम

(जुमे के दिन एक हज़ार मर्तबा यह दरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को मरने से पहले जन्नत में उसका ठिकाना दिखा दिया जाता है)

अस्सी साल की इ़बादत का स्वाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ النَّبِيِّ
الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيمًا

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदि निन-नबीयिल उम्मीय्यि व अ़ला आलिही व सल्लिम तस्लीमा

(जुमे के दिन जहाँ नमाज़े अस्र पढ़ी हो उसी जगह उठने से पहले अस्सी मर्तबा यह दरूद शरीफ़ पढ़ने से अस्सी साल के गुनाह मुआफ़ होते हैं और अस्सी साल की इ़बादत का सवाब मिलता है।)

दोज़ख़ से निजात

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ
النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदि निन-नबीयिल उम्मीय्यि व अ़ला आलिही वसल्लिम

(हज़रत ख़ल्लाद (रहमतुल्लाहि अ़लैह) जुमे के दिन यह दरूद शरीफ़ एक हज़ार मर्तबा पढ़ा करते थे, उनके इन्तिक़ाल के बाद उनके तकिये के नीचे से एक काग़ज़ मिला जिस पर लिखा हुआ था कि ये ख़ल्लाद बिन कसीर के लिए दोज़ख़ से आज़ादी का परवाना है)

हर दर्द की दवा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ بِعَدَدِ كُلِّ دَاءٍ وَّ
دَوَاءٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिम्बि -अ़-द-दि कुल्लि दा-इंव व दवा-इंव व बारिक व सल्लिम

(हर दर्द और बीमारी दूर होने के लिए अव्वल व आख़िर दरूद शरीफ़ पढ़ें और दर्मियान में बिस्मिल्लाह के साथ सूरए फ़ातिहा पढ़कर दम करें)

अरशे अ़ज़ीम के बराबर सवाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ مِلْاَ السَّمٰوٰتِ
وَمِلْاَ الْاَرْضِ وَمِلْاَ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंन मिलअस्समावाति वमिल अल-अरदि व

मिल-अल-अ़रशिल अज़ीम

(इस दरूद शरीफ़ के पढ़ने वाले को आसमान व ज़मीन भर कर और अ़रशे अज़ीम के बराबर सवाब मिलता है)

रोज़ी में बरकत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन अ़ब्दिका व रसूलिका व स़ल्लि अ़लल मुअ़मिनीना व मुअ़मिनाति वल मुस्लिमीना वल मुस्लिमाति

(जिस शख़्स़ की यह ख़्वाहिश हो कि उसका माल बढ़ जाये वो इस दरूद शरीफ़ को पढ़ा करे)

अफ़ज़ल दरूद शरीफ़

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ الَّذِىْ مَلَاْتَ قَلْبَهٗ مِنْ جَلَالِكَ وَعَيْنَيْهِ مِنْ جَمَالِكَ فَاَصْبَحَ فَرِحًا مَّسْرُوْرًا مُّؤَيَّدًا مَّنْصُوْرًا

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदि निल-लज़ी मलाता क़ल-बहू मिन जलालिका व अ़यनयहि मिन जमालिका फ-अस़-बह़ा फ़रिह़म मसरूरम मुअ़य्येदम-मनस़ूरा

(शैख़ अबु अ़ब्दुल्लाह नोअ़मान (रह़मतुल्लाहि अ़लैह) को ख़्वाब में सौ मर्तबा रसुले करीम (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ज़ियारत हुई, आख़िरी मर्तबा में उन्होंने हुज़ूर से अफ़ज़ल दरूद शरीफ़ पूछा तो आप (स़ल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने यह दरूद शरीफ़ तअ़लीम फ़रमाया)

दरूद बराए ह़ल्लिल मुश्किलात

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
قَدْ ضَاقَتْ حِيْلَتِيْ اَدْرِكْنِيْ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि वसल्लिम व-बारिक अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिन क़द ज़ाक़त ह़ी-ल-ती अदरिकनी या रसूलल्लाह

हुज़ूर (स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम) फ़रमाते हैं जो शख़्स मेरे नाम के साथ (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) लिखता है जब तक उस किताब में मेरा नाम रहेगा फ़रिश्ते उसके लिए मग़्फ़िरत करते रहेंगे।

दरूदे क़ुरआनी

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ بِعَدَدِ
مَا فِيْ جَمِيْعِ الْقُرْاٰنِ حَرْفًا حَرْفًا وَّبِعَدَدِ كُلِّ حَرْفٍ اَلْفًا اَلْفًا

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिंव व आलिही व-अस़्ह़ाबिही बिअ़द-दि मा फ़ी

जमीइ़ल क़ुरआनि, ह़रफ़न ह़रफ़न व बि-अ़ददि कुल्लि ह़रफ़िन अल्फ़न अल्फ़न

(तीन मर्तबा सुबह़ और शाम यह दरूद शरीफ़ पढ़ने से ज़बरदस्त कामियाबी मिलती है)

ख़ज़ीनए फ़ज़ाइलो बरकात

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَسَلَّمَ صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ

स़ल्लल्लाहु अ़लन-नबीय्यिल उम्मीय्यि व आलिही स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लमा स़लातँव व सलामन अ़लैका या रसूलल्लाह

(यह दरूद शरीफ़ हर नमाज़ ख़ुसूस़न नमाज़े जुमा के बाद मदीना मुनव्वरा की त़रफ़ मुँह करके सौ मर्तबा पढ़ने से बेशुमार फ़ज़ाएलो बरकात ह़ास़िल होते हैं)

तमाम औक़ात में दरूद

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ فِیْ اَوَّلِ کَلَامِنَا۔ اَللّٰھُمَّ
صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ فِیْ اَوْسَطِ کَلَامِنَا، اَللّٰھُمَّ صَلِّ
عَلٰی مُحَمَّدٍ فِیْ آخِرِ کَلَامِنَا

अल्लाहुम्मा सल्लि अ़ला मुह़म्मदिन फ़ी अव्वलि कलामिना अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन फ़ी औ-स-ति कला-मिना अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन फ़ी आख़िरि कलामिना।

शैख़ुल इस्लाम अबू अ़ब्बास ने फ़रमाया जो शख़्स दिन रात में तीन–तीन मरतबा यह दरूद शरीफ़ पढ़े वह गोया रात व दिन के तमाम औक़ात में दरूद भेजता रहा।

हज़ार दिन तक नेकियाँ

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا وَمَوْلٰینَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی
اٰلِ سَیِّدِنَا وَمَوْلٰینَا مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिंव व अ़ला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिन कमा तूह़िब्बु व तरद़ा लहु।

एक रिवायत में है कि जो शख़्स़ यह दरूद शरीफ़ एक मरतबा पढ़ता है तो सत्तर फ़रिश्ते एक हज़ार दिन तक उसके नामए अअ़्माल में नेकियाँ लिखते रहते हैं।

रूहानी तरबियत का मुजर्रब नुस्ख़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ فِىْ كُلِّ لَمْحَةٍ وَّ
نَفَسٍ بِعَدَدِ كُلِّ مَعْلُوْمٍ لَّكَ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि वसल्लिम अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिंव व अ़ला आलि सय्यिदिना मुह़म्मदिन फ़ी कुल्लि लमह़तिंव व नफ़सिम-बिअ़द-दि कुल्लि मअ़लूमिल्लका़

(दुआ़ में जब तक नबी—ए—अकरम (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) पर दरूद शरीफ़ न भेजेंगे तब तक दुआ़ ज़मीन व आसमान के दरमियान लटकी रहेगी।

छः लाख दरूद शरीफ़ का स़वाब

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلٰنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ
مَا فِىْ عِلْمِ اللّٰهِ صَلٰوةً دَائِمَةً بِدَوَامِ مُلْكِ اللّٰهِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना व मौलाना मुह़म्मदिन अ़-द-द माफ़ी इ़ल्मिल्लाहि स़लातँन दाइमँत बिदवामि मुल्किल्लाह

(शैख़ुल दलाइल ने ह़ज़रत जलालुद्दीन सियोत़ी से रिवायत की, इस दरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छः लाख़ दरूद शरीफ़ पढ़ने का स़वाब हासि़ल होता है)

दरूदे जमाली

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِهٖ بِقَدْرِ حُسْنِهٖ وَجَمَالِهٖ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना मुह़म्मदिंव व-अ़ला आलिही बिकद़रि हुस्निही व जमालिही

(ह़ज़रत इमाम ह़सन बिन अ़ली (रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा) का इर्शाद है कि जो शख़्स़ किसी मुहिम या परेशानी या मुसीबत में हो तो इस दरूद शरीफ़ को एक हज़ार मर्तबा मुह़ब्बत और शौक़ से पढ़े और अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी मुसीबत टाल देगा और उसको उसकी मुराद में कामियाब कर देगा)

हुज़ूर (स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के रौज़ए मुबारक की ज़ियारत

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تَكُوْنَ
لَكَ رِضًا وَّلِحَقِّهٖ اَدَاءً

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुह़म्मदिन स़लातन तकू-न लका़ रिद़ंव व लि-ह़क़्क़िही अदा-अ़न।

(जो शख़्स़ नमाज़े फ़ज्र के बाद और नमाज़े मग़रिब के बाद ३३—३३ बार यह दरूद पढ़ेगा तो उस शख़्स़ की क़ब्र और रौज़ए अक़दस के दर्मियान एक खिड़की खोल दी जाएगी और रौज़ए अक़दस की ज़ियारत उसको नस़ीब होगी)

दफ़ऐ निसयान का नुस्ख़ा

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاٰلِهٖ كَمَا لَا نِهَايَةَ

لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला मुहम्मदिंव व-आलिही कमाला निहायता् लिकमा-लिका् व अ़ददा कमालिही।

(दफ़ऐ निसयान के लिए यह दरूद शरीफ़ मग़रिब और इशा के दरमियान जितना पढ़ सकें पढ़ें)

दरूदे नूर

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ نُوْرِ الْاَنْوَارِ وَسِرِّ الْاَسْرَارِ وَسَيِّدِ الْاَبْرَارِ

अल्लाहुम्मा स़ल्लि अ़ला सय्यिदिना मुहम्मदिन नुरिल अनवारि व-सिर्रिल अस्रारि वसय्यिदिलअबरारि।

(ह़ज़रत अ़ली (रज़ियल्लाहु अ़न्हु) से ह़दीस् शरीफ़ नक़ल है कि तुम्हारा मुझपर दरूद पढ़ना तुम्हारी दुआ़ओं की हिफ़ाज़त करने वाला है और तुम्हारे रब की रज़ा का सबब है)